बिस्मिल्लाह की बरकत

माइल ख़ैराबादी

विषय-सूची

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा निर्रहीम

बारह-चौदह वर्ष पहले की बात है, मैं रामपुर से अपने वतन ख़ैराबाद गया। वहाँ अपने एक रिश्तेदार से मिला। उनके बच्चों से मिला। उन बच्चों में एक बच्ची थी। उसने जैसे ही मुझे देखा, दोनों हाथ जोड़ कर, 'नमस्ते' किया। उसके वालिद ने उसे घूर कर देखा तो उसने झट से 'सलाम अलैकुम' कहा। बाद में मालूम हुआ कि यह बच्ची स्कूल में पढ़ने जाती है।

यह तो बारह साल पहले की बात है। मगर अब जो देखता हूँ, तो नई शिक्षा के प्रभाव से हाथ जोड़ कर नमस्ते करना मुसलमान बच्चों और बच्चियों में आम होता जा रहा है। बच्चों की बोल-चाल, तौर-तरीक़े, सब बदलते जा रहे हैं। वे इस्लामी तेहज़ीब (सभ्यता) और आदाब (शिष्टाचार) से बिल्कुल कोरे होते जा रहे हैं। साथ ही अपने पूर्वजों को भी भूलते जा रहे हैं। उनकी जगह ऐसे पुरखों की कहानियां उनको पढ़ने सुनने को मिल रहीं हैं, जो शिर्क से भरी पड़ी हैं।

यह देख कर मैंने पहले एक सिलसिला 'हमारे बुज़ुर्ग' नाम से शुरू किया था। वह पूरा हुआ तो इस्लामी तेहज़ीब व आदाब पर ध्यान दिया। अलहम्दुलिल्लाह इस सिलसिले की पहली कड़ी इस पुस्तक के रूप में आपके हाथों मे है। वे छोटे-छोटे बोल इस किताब का विषय बने जो इस्लामी सभ्यता व शिष्टाचार की शान हैं, और जो विभिन्न मौक़ों पर हमारी जुबान से अदा होने चाहिएं। उन छोटे-छोटे बोलों को लेकर कहानी के रूप में बच्चों से कहलवाने की कोशिश की है। इस प्रकार यह किताब लाभदायक होने के साथ-साथ बच्चों के लिए रूचिकर भी हो गई है।

माइल ख़ैराबादी (१९७४)

१ 'बिस्मिल्लाह' की बरकत

''मुझे याद नहीं होता'' सईदा ने झुंझला कर बसता अलग रख दिया, सफ़्फ़ो बाजी ने लाख समझाया कि झट-पट सबक़ याद करले, फिर अम्मीजान आकर कहानी सुनायेंगी, मगर सईदा का जैसे दिल ही न लगता था। उसने किताब बसते में रखदी तो निकाली ही नहीं।

अम्मीजान ने आकर बच्चों से पूछा: ''सबक़ किस-किस ने याद कर लिया?'' सफ़्फ़ो बाजी ने जब बताया कि सईदा ने सबक़ याद नहीं किया, तो अम्मीजान बोलीं, 'बिस्मिल्लाह' न पढ़ी होगी, 'बिस्मिल्लाह पढ़ कर सबक़ याद करना शुरू करतीं तो दिल भी लगता और सबक़ याद भी हो जाता। फिर समझाने लगीं : बच्चों, 'बिस्मिल्लाह' में बड़ी बरकत है और इसके बारे में कई सच्चे क़िस्से बहुत मशहूर हैं।'

यह बात सुनकर सईदा चौंकी। उसे तो बिस्मिल्लाह पढ़कर कोई काम शुरू करने की आदत ही नहीं थी। सब बच्चों ने अम्मीजान से कहा कि वे उनको 'बिस्मिल्लाह' की बरकत का कोई सच्चा क़िस्सा सुनायें, तो अम्मीजान बोलीं—'अच्छा तो भई सुनो।'

''बहुत दिनों की बात है एक यहूदी था। बड़ा सख़्त और कडुवे मिज़ाज वाला, और इस्लाम व मुसलमानों का कट्टर दुश्मन। अल्लाह ने उसको एक बेटी दी थी। वह बड़ी नेक दिल, भोली-भाली और सच्ची बात को दिल से मानने वाली बच्ची थी। एक दिन उसने मौलवी साहब की एक तक़रीर सुनी, जिसमें उन्होंने ईमान की सच्चाई और साथ ही

'बिस्मिल्लाह' की बरकत के बारे में बताया था। वे सच्ची बातें उस लड़की को बहुत अच्छी लगीं। और वह दिल से मुसलमान हो गई। और हर काम बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू करने लगी।

उसने जैसे ही घर के दरवाज़े में क़दम रखा, तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, खाना पकाने चली तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, सबक़ याद करने बैठी तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, कपड़े पहने तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, खाना खाने बैठी तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, सोने लगी तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी और सोकर उठी तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़ी, बाप ने कोई चीज़ लाकर दी तो 'बिस्मिल्लाह' कह कर हाथ में ली। जब बाप ने देखा कि बेटी तो बात-बात पर 'बिस्मिल्लाह' कहती है,तो उसके दिल में खटका पैदा हुआ। उसने बेटी से पूछा : तुम बात-बात पर 'बिस्मिल्लाह' क्यों कहती हो, क्या मुसलमान हो गई हो?''

वह लड़की पहले तो डरी, और चाहा कि झूठ बोल दे। मगर उसको याद आया, मौलवी साहब ने यह भी तो कहा था, अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरना चाहिए, हमेशा सच्ची बात कहो, झूठ न बोलो जो सच बोलता है अल्लाह उसकी मदद करता है।'' जब उसे यह बातें याद आईं तो उसने अपने ज़ालिम बाप को सच-सच बता दिया कि 'हां अब्बा मैं मुसलमान हो गई हूं। मैं उस अल्लाह की आज्ञाकारी बन गई हूं, जो हम सब का पालनहार है।' यह सुनना था कि बाप को बहुत ज़ोर का गुस्सा आ गया। उसने उसे बहुत डांटा फटकारा, मगर लड़की पर उसका कोई असर नहीं हुआ। सच है जो अल्लाह से डरना सीखले वह किसी और से कहां डर सकता है।

वह यहूदी बाप इस पर बहुत दुखी हुआ और सोचने लगा कि किस तरह वह अपनी लाडली बेटी को अपने धर्म में वापस लाए। इसके लिए

उसने एक तरकीब सोची। उसने बेटी को एक अगूंठी दी और कहा कि इसको सम्भाल कर रखना, गुम न होने पाए।' लड़की ने 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर अगूंठी ले ली और अपने पास एक ताक़ में रखदी। वह उस वक़्त बरतन धो रही थी। सोचा कि बरतन धोकर उंगली में पहन लूंगी। यह बाप ने देख लिया कि लड़की ने अगूंठी कहां रखी है। कुछ देर बाद उसने बेटी को आवाज़ दी। बेटी 'बिस्मिल्लाह' करके उठी और बाप के पास पहुंच गई। बाप ने उसे पैसे दिये और कोई चीज़ लाने बाज़ार भेज दिया। बेटी ने 'बिस्मिल्लाह' कहकर पैसे लिए और बाप का बताया हुआ सामान लेने बाज़ार चली गई। इधर बेटी घर से निकली, उधर बाप ने झट-पट अगूंठी उठाकर अपनी जेब में रखली।

जैसे ही लड़की बाज़ार से लौटी बाप ने उस से कहा। 'जल्दी खाना तैयार करो। मुझे एक ज़रूरी काम से जाना है। खाना खाकर तुरन्त जाना है।' लड़की 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर खाना पकाने लगी''।

''और सुनिए तो अम्मीजान, उसको अंगूठी याद नहीं आई'' सईदा पूछ बैठी।

अम्मीजान ने कहा—'' हाँ बेटी जल्दी में उसको अंगूठी उठानी याद नहीं रही। वह काम में लगी रही। खाना पकाया, बाप को खिलाया। और बाप खाना खाकर चला गया। कुछ देर बाद उसे अंगूठी याद आई। वह दौड़ी-दौड़ी उस ताक़ के पास गई जिसमें अंगूठी रखी थी, मगर वहां अंगूठी होती तो मिलती। बेचारी बहुत घबराई। तभी उसे मौलवी साहब की बात याद आई। उसने अपने अल्लाह को याद किया, और उसी से मदद चाही। उसे यक़ीन था कि वह बेक़सूर है, अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा।

बाप ने सोचा कि अंगूठी पास रहेगी तो फिर लड़की को मिल सकती है। इसलिए उसको एक गहरी नदी में फेंक आया। दो-तीन दिन बाद उसने बेटी से कहा, ''मैंने जो अंगूठी रखने के लिए दी थी वह लाकर दो'' बेटी ने सच-सच बता दिया कि अंगूठी तो खो गई। यहूदी बाप ने उसको खूब डांटा डपटा, और कहा अगर तीन दिन में तूने अंगूठी तलाश करके न दी तो खूब पिटेगी। ''लड़की चुप रही और दिल ही दिल में अल्लाह से मदद मांगने लगी।

सफ़्फ़ो ने जल्दी से पूछा, ''तो अम्मीजान अल्लाह ने उसकी मदद की'' अम्मी ने कहा। हाँ क्यों न करता मदद, जब वह हर काम में अल्लाह को याद रखती थी।''

सईदा बोली, ''अम्मीजान जल्दी बताइए अल्लाह ने उसकी कैसे मदद की?''

अम्मीजान ने कहा, 'सुनो, बेटी को डांट-फटकार कर यहूदी घर से बाहर चला गया। टहलता-टहलता बाज़ार पहुँचा। देखा तो ताज़ा मछलियां बिक रही थीं। उसने एक मछली पसन्द की और खरीद कर घर ले आया। और बेटी से बोला—'इस को अभी काटकर पकाओ' और अंगूठी मिली'' लड़की ने कहा—'अब्बा जान अभी नहीं मिली'' उसने 'बिस्मिल्लाह' कहकर बाप से मछली ली और पकाने चली। जैसे ही 'बिस्मिल्लाह' कह उसने मछली का पेट चीरा, पेट में से एक अंगूठी निकली। उसने अंगूठी को साफ किया। देखती क्या है, यह तो वही अंगूठी है, जो खो गई थी। वह बहुत खुश हुई, अल्लाह का शुक्र अदा किया और 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर अपनी उंगली में अंगूठी पहन ली। खाना पकाया। बाप को खिलाया। खाना खाकर बाप ने पूछा, 'अंगूठी मिली' तो लड़की ने 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर उंगली से अंगूठी

निकाली और बाप को दे दी। अंगूठी देख कर वह हैरान रह गया। बेटी से पूछा अंगूठी कैसे मिली तो बेटी ने जवाब दिया, 'मेरे अल्लाह ने मदद की। 'बिस्मिल्लाह' की बरकत से मुझे मिल गई।

कहानी खत्म करके अम्मीजान ने पूछा बच्चों समझे अंगूठी कैसे मिली। ''फिर खुद ही बोली,'' बच्चों बात यह हुई कि अल्लाह के हुक्म से नदी में गिरते ही अंगूठी को एक मछली ने निगल लिया। फिर मछेरे ने मछली पकड़ने के लिए नदी में जाल डाला तो वह मछली भी उसके जाल में फंस गई। फिर 'बिस्मिल्लाह' की बरकत से यहूदी ने उसी मछली को खरीदा और घर ले आया। इस तरह अल्लाह ने उस लड़की की मदद की और नदी से अंगूठी उस के पास पहुंचा दी।

तो बच्चों यह है 'बिस्मिल्लाह' की बरकत। अगर तुम भी काम शुरू करने से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़ लिया करो,तो अल्लाह तुम्हारी भी मदद करेगा और तुम्हारे सब काम बना देगा।

अम्मीजान जैसे ही चुप हुई सईदा ने पूछा : मगर अम्मीजान आपने यह तो बताया ही नहीं कि 'बिस्मिल्लाह' का मतलब क्या होता है?'' इस सवाल पर अम्मीजान बहुत खुश हुईं और कहा बेटी तुमने अच्छी बात पूछी है। सुनो 'बिस्मिल्लाह' अरबी का शब्द है। इसका मतलब है। ''अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं'' सफ्फो ने पूछा,'नहीं अम्मी पूरी 'बिस्मिल्लाह' का मतलब बताइये। पूरी 'बिस्मिल्लाह' जो हमने सिपारे में पढ़ी है। अम्मीजान ने सफ्फो को प्यार किया और बोलीं पूरी 'बिस्मिल्लाह' यह है, ''बिस्मिल्लाह हिर-रहमा-निर-रहीम'' और मतलब इसका यह है, ''शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहमान और रहीम अर्थात दया करने वाला है।''

२ अस्सलामु अलैकुम

आज हमने दिल में सोच लिया था कि अम्मीजान आएँगी तो सिद्दू को खूब पिटवाएगें। बात ही ऐसी थी, उसकी पिटाई होनी ही चाहिए। तौबा-तौबा कैसी-कैसी गालियाँ बकीं उसने। गली में खड़ा ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था, और जलाल को गंदी-गंदी गालियाँ दे रहा था।

अच्छा भई, अम्मी आईं, और हमने सिद्दू की गालियों वाली गंदी बात अम्मीजान को बता दी। हम सबने, मैनें, सफ़्फ़ो ने, अप्पा ने, सईदा बी ने, शौकत ने, रफ्फो ने, बाजी ने और हमीदा आपा ने अम्मीजान से उसकी शिकायत की।

अम्मीजान का मुँह भी गुस्से से लाल हो गया। ऐसा लगता था कि सिद्दू जैसे ही घर आएगा उस पर अम्मीजान की ऐसी डांट पड़ेगी कि मियां गाली देना सब भूल जाएँगें। मगर वाह भई वाह, सिद्दू आया, उसने दरवाज़े में घुसते ही ज़ोर से अस्सलामु-अलैकुम कहा और एक तरफ बैठ गया। अम्मीजान ने 'वालैकुम-अस्सलाम' कहा। हम सबने भी 'वालैकुम-अस्सलाम' कहा, और अम्मी का मुहँ देखने लगे कि अब सिद्दू पर डांट पड़ी। मगर अम्मी का गुस्सा तो 'वालैकुम-अस्सलाम' कहने के साथ ही कम हो चुका था। उन्होंने सिद्दू को देखा, मगर न उसे डांटा, फटकारा, न कान खिंचाई की और न चपत रसीद किया। हम सोचने लगे, देखें अब क्या होता है। मगर कुछ नहीं हुआ। नन्हीं गुल्लो से न रहा गया, और बोल उठी : 'अम्मी जी, छुद-दू धैया, आदे' गुल्लो का मतलब साफ था। सिद्दू ने गली में गालियाँ बकी थीं, इसलिए उसको डांट तो पड़नी ही चाहिए। सज़ा तो मिलनी ही चाहिए। अम्मीजान उसका मतलब समझ गईं, और मुस्करा कर बोली ''आज

सिद्दू की पिटाई ज़रूर होती। लेकिन उसने घर में आते ही 'अस्सलामु-अलैकुम' कहा तो गुस्सा अपने आप खत्म हो गया।

'अले वा, ओल दालियाँ जो बकीं?' नन्ही गुल्लो फिर बोली। सिद्दू समझ गया कि उसकी शिकायत अम्मीजान से की गई है। मगर वह कुछ बोला नहीं, और चुप-चाप बैठा रहा। अम्मीजान ने उसकी तरफ देखा, फिर कहने लगीं—मैं जब छोटी थी, यही सिद्दू जितनी बड़ी रही हूँगी, तो एक दिन मेरे अब्बू मियां को मुझ पर बहुत ज़ोर का ग़ुस्सा आ गया। उनको ग़ुस्से में देखकर मैं तो डर ही गई कि कहीं डांट के साथ मार भी न पडे। लेकिन अब्बाजान को देखते ही मैनें झट-पट कहा, 'अब्बाजान अस्सलामु-अलैकुम' बस मेरा सलाम करना था कि अब्बाजान का ग़ुस्सा ठंडा हो गया। ऐसा ही आज भी हुआ। सिद्दू ने सलाम किया तो मेरा ग़ुस्सा जाता रहा।'

शौकत ने पूछा: कैसे जाता रहा अम्मी?'

'बात यह है बच्चों, हमारे प्यारे नबी सल-लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने फ़रमाया है कि सलाम करने से मुहब्बत पैदा होती है। बस यही बात है कि जब कोई सलाम कर लेता है तो ग़ुस्सा ख़ुद-बख़ुद जाता रहता है। मैं तुमको एक कहानी सुनाती हूँ।

अम्मीजान ने कहानी का नाम लिया तो हमारी बेचैनी और बढ़ गई और कहा, 'हाँ अम्मीजान, जल्दी से सुनाइए कहानी।' तो अम्मीजान ने यह कहानी सुनाई:

'एक दरज़ी था। उसकी दुकान बाज़ार में थी। जब वह दुकान से घर आता और घर से दुकान जाता, तो रास्ते में उसको बहुत से आदमी मिलते। वह सबको 'सलाम' करता। रास्ते में एक 'नवाब साहब' का घर पड़ता। वे अक्सर घर के सामने बैठक में बैठे हुए दिखाई देते।

दरज़ी आते-जाते उनको भी सलाम करता। यह नवाब साहब बहुत गुसैल मशहूर थे। खूब दौलतमन्द भी थे, इसलिए लोग उनसे बहुत डरते, और सामने से बचकर निकल जाते। दरज़ी भी बस अस्सलामु-अलैकुम कहता और आगे बढ़ जाता। सलाम के सिवा नवाब साहब से कभी कोई और बात न होती।

कुछ दिनों के बाद क्या हुआ कि दरज़ी के एक शत्रु ने उसके खिलाफ़ एक मुकद्दमा कर दिया। बेचारा दरज़ी बहुत परेशान हुआ। उसके पास इतने पैसे भी न थे कि मुक़दमे का खर्च उठा लेता। और वकील को फीस दे देता। बेचारा अकेला ही अदालत में हाज़िर हो गया।

मगर देखता क्या है कि वहां शहर का सबसे मशहूर वकील मौजूद है। और दरज़ी का इतंज़ार कर रहा है। वकील ने दरज़ी को बताया कि वह उसकी तरफ से मुकदमा लड़ेगा। दरज़ी ने बहुत कहा, 'आपकी फीस देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं' मगर वकील ने यह बात सुनी-अनसुनी करदी। और दरज़ी की तरफ से मुकदमा लड़ने लगा। पेशी होती, दरज़ी अदालत में हाज़िर होता और वकील भी आते। मुकदमा बहुत दिनों तक चलता रहा। दरज़ी बहुत हैरान था कि इतना बड़ा वकील मुफ्त में उसकी पैरवी क्यों कर रहा है? उसने कई बार वकील साहब से कहा, 'जनाब मैं ग़रीब आदमी हूँ, आपकी फीस कहां से दूँगा?' मगर वकील साहब कोई जवाब न देते। आखिर एक दिन मुकदमें का फैसला हुआ। दरज़ी बरी हो गया। वकील साहब मुस्कराते हुए अदालत से निकले। और अपनी कार में बैठ कर घर चले गये। वह ग़रीब दरज़ी खड़ा देखता ही रह गया।

''अरे वाह, बड़ा अच्छा वकील था'' हम सब एक साथ बोल उठे।

सिद्दू ने अम्मीजान से पूछा 'फिर क्या हुआ अम्मीजान, यह तो बताइए वकील साहब ने इतनी मेहरबानी क्यों की?' अम्मीजान ने कहा, 'अभी कहानी ख़त्म क़हां हुई। आगे का क़िस्सा भी तो सुनो। 'हम सब एक साथ बोल उठे' 'सुनाइए आगे क्या हुआ।'

अम्मी ने कहना शुरू किया,'तो भई बच्चों जब दरज़ी बरी हो गया तो फिर उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया। घर आया तो उसके कई दोस्त व रिश्तेदार मुबारकबाद देने आ गये। उसने जल्दी-जल्दी उनके लिए खाने का इन्तज़ाम किया। अभी खाना खा ही रहे थे कि एक कार दरवाज़े पर आकर रूकी। पहले वकील साहब कार से उतरे, फिर नवाब साहब और आगे से नवाब साहब के खजांची साहब। तीनों आगे पीछे दरज़ी के घर की तरफ बढ़े तो दरज़ी पहले तो घबराया, फिर झटपट बाहर निकला और सबको सलाम किया। सबने सलाम का जवाब दिया, और अन्दर आकर उसी फटे पुराने टाट पर बैठ गये जिस पर दूसरे मेहमान बैठे खाना खा रहे थे। दरज़ी हैरान था कि वह यह सब क्या देख रहा है? उसने जल्दी-जल्दी आंखें मलीं, कि कहीं सपना तो नहीं देख रहा। मगर बच्चों वह जो कुछ देख रहा था सच था। सचमुच क्रोधी नवाब साहब, शहर के मशहूर वकील साहब उस ग़रीब के मकान में, उसके ग़रीब दोस्तों के साथ फटे पुराने टाट पर बैठे मुस्करा रहे थे।

दरज़ी ने डरते-डरते पूछा, 'जनाब ने इस ग़रीब के घर आकर उसको इज़्जत दी। लेकिन यह तो फरमाइए कि कैसे... अभी दरज़ी की बात पूरी न हुई थी कि नवाब साहब बोल उठे, 'मियां वकील साहब से मालूम हुआ कि तुम मुकदमा जीत गए हो। फिर हमारे नौकर ने बताया कि तुमने इस खुशी में अपने दोस्तों की दावत की है। तुमने हमें

बुलाया नहीं मगर हम भी दावत में शरीक होने आगए हैं। बुरा तो नहीं माने तुम।'

दरज़ी ने खुश होकर कहा, 'नहीं जनाब, हम को तो बड़ी खुशी हुई। आप बड़े आदमी और हम ग़रीब। और भला हम ग़रीबों की दावत ही क्या। आप तशरीफ लाए है,' यह हमारी खुशक़िस्मती (हमारा सौभाग्य) है। अब जो दाल दलिया ग़रीब के घर मौजूद है, वह हाज़िर है। नोश फरमाईए।'

'अम्मीजान नोश फरमाईए का क्या मतलब है?'

'इसका मतलब है 'खाईए'। इसके बाद नवाब साहब और वकील साहब ने भी दरज़ी के दोस्तों के साथ थोड़ा बहुत खाया।

जब चलने लगे तो नवाब साहब ने अपने मैनेजर को इशारा किया और उसने ५०० रुपया निकाल कर दरज़ी को पेश किये। दरज़ी का मुहं खुला का खुला रह गया। वह कहने लगा—

'जनाब नवाब साहब...

मगर नवाब साहब बीच में बोल उठे, 'मियां यह रुपया तुमको लेना होगा, वरना मेरा गुस्सा तुम जानते ही हो।'

दरज़ी ने डरते-झिझकते रुपया ले लिया, मगर पूछने लगा, 'जनाब नवाब साहब इतना तो बता दीजिए कि आपने इतनी ज्यादा मेहरबानी क्यों की?

नवाब साहब बोले, 'भई तुम तो मुझे रोज़ इस से भी ज्यादा देते हो।'

'ऐं! मैं हज़ूर को...' दरज़ी हक्का-बक्का रह गया।'

'हाँ भई तुम मुझे रोज़ दो बार सलाम करते हो। कहते हो, अस्सलामु-अलैकुम। अस्सलामु-अलैकुम' की तो बहुत बड़ी क़ीमत है

मियां। जानते हो, अस्सलामु-अलैकुम का क्या मतलब है? अस्सलामु-अलैकुम का मतलब है, तुम पर अल्लाह की सलामती हो यानी अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे तुम ख़ुश रहो और आराम से रहो। इस दुनिया में भी, और मरने के बाद उस दुनिया में भी। उस दिन जब अल्लाह सब से उन के कामों का हिसाब लेगा, तो भई, तुम मुझ को रोज़ कितनी कीमती दुआ देते हो। फिर यह कि तुम जो मुझे रोज़ दुआ देते हो, और वह भी बगैर किसी लालच के, इसलिए मुझे तुम से मुहब्बत हो गई है। इसी मुहब्बत की वजह से मैं तुमको अपना दोस्त समझता हूँ, और तुम्हारी ख़ुशी में शरीक होने तुम्हारे घर बग़ैर बुलाए चला आया हूँ।'

'बड़ी मेहरबानी जनाब की। अल्लाह आपको इसका अच्छा बदला दे।'

फिर नवाब साहब तो वकील के साथ चले गए। उनके मैनेजर ने दरज़ी को बताया कि, 'यह जो वकील साहब हैं ना, इन को नवाब साहब ने ही एक हज़ार रुपया फीस देकर तुम्हारी तरफ से मुक़दमा लड़ने भेजा था। यह सब तुम्हारे सलाम की बरकत है।

अम्मीजान यह कहानी खत्म करके कहने लगीं, तो देखा बच्चों तुमने सलाम में कितनी बरकत है। आज सिद्दू ने सलाम किया तो मेरा ग़ुस्सा भी जाता रहा। तुम में अगर झगड़ा हो जाया करे तो तुम भी आपस में अस्सलामु-अलैकुम कहा करो। इससे आपस में मुहब्बत पैदा होगी। तुम्हारे दिल का ग़ुस्सा दूर हो जाएगा।

'बहुत अच्छा अम्मीजान, अस्सलामु अलैकुम'।

हम सब ने एक साथ कहा, और अम्मीजान वालैकुम अस्सलाम कह कर नमाज़ पढ़ने चली गई। और हम सब अपने-अपने बिस्तर में घुस

३ इनशा-अल्लाह

''मैं तो सवाल चुटकी बजाते हल कर लूगाँ''

''मैं इम्तहान में अव्वल आऊगाँ''

'मैं खेल-कूद में फर्स्ट आऊगाँ''

हम सब बैठे इसी प्रकार अपने अपने दिल की बातें कह रहे थे, कि अम्मीजान आगईं। पूछा, 'क्या डींगे मार रहे हो?' तो हम सबने अपने-अपने हौसले बयान कर दिए। मगर सईदा चुपकी बैठी रही अम्मी ने उस से पूछा, 'तुम क्या सोच रही हो सईदा?' तो सईदा बोली, 'अम्मी यह डींगे मारने का क्या मतलब होता है?'

अम्मीजान ने बताया, 'घमंड और गुरुर की बातें करने को डींगें मारना कहते हैं। मैं यह कर डालूंगा, मैं वह कर डालूंगा। वग़ैरह-वग़ैरह।

मगर सुनिए तो अम्मीजान सिद्दू ने ऐतराज़ जड़ दिया, 'आप भी तो कहा करती हैं, आज यह काम करुंगी, कल वह करुंगी, और वहां जाऊंगी वग़ैरह'। सिद्दू ने वग़ैरह को सर झटक कर इस तरह कहा कि सब को हंसी आगई। अम्मीजान को भी हंसी आगई। अम्मीजान ने बताया, 'जब मैं कोई काम करने का इरादा करती हूं और उसे ज़ुबान से कहती हूं तो 'इनशा-अल्लाह' ज़रूर कह लेती हूं। इनशा-अल्लाह कह लेने से अल्लाह काम पूरा करा देता है।

अल्लाह ने अपने रसूलों को इनशा-अल्लाह कहना सिखाया और रसूलों ने अपनी उम्मत को सिखाया कि जब किसी काम को करने का इरादा करें तो इनशा-अल्लाह कह लिया करें। इससे अल्लाह की मदद मिल जाती है, काम करने में चुस्ती-फुरती आजाती है, आदमी का

हौसला बढ़ जाता है और काम आसान हो जाता है।

अम्मी के चुप होते ही आपा ने कहा, 'अम्मीजान वह इनशा-अल्लाह' वाली कहानी भी तो सुनाई थी एक बार आपने'

हम सब बोल उठे, 'कौन सी कहानी? अम्मी हमने नहीं सुनी, हमें भी सुनाइए।' हमारी फ़रमाएश पर अम्मी ने कहानी सुनानी शुरू की।

'तो भई सुनो। एक किसान था। उसके पास बहुत से खेत थे। एक मरतबा की बात है कि उसने खेतों में बहुत मेहनत की। हल चलाकर मिट्टी को भुर-भुरा किया। उनमें खाद डाला, फिर उनमें गेहूं का बीज बोया। अल्लाह के हुक्म से बीज से पौधे निकले और बड़े हो गए। फिर उनमें बालियाँ आईं। बालियों में दाने आए और देखते ही देखते दाने पक गए। किसान रोज़ अपने खेत देखने जाता और देख-देखकर खुश होता। जब खेत में खड़ी गेहूं की फसल पक कर कटने के लिए तैयार हो गई, तो उसने कहा, 'कल बस्ती के लोगों को साथ लाकर खेती कटवा लूंगा।' खेत में एक चिड़िया ने भी अपना घोंसला बना लिया था। घोंसले में उसने जो अंडे दिये थे उनमें से बच्चे निकल आए थे। किसान जब आता तो बच्चे अपने घोंसले में दुबक जाते। चिड़िया के नन्हे-नन्हे बच्चों ने जब किसान की बातें सुनी तो बेचारे घबरा गए। क्योंकि खेत कटेगा तो उनका घोंसला भी उजड़ जाएगा। फिर वे कहां छिपा करेंगे? चील, कव्वा कोई भी उनको ले उड़ेगा। चिड़िया आई तो देखा कि बच्चे डरे हुए हैं। उसने बच्चों से पूछा: 'क्यों डर रहे हो?' तो बच्चों ने कहा: 'अम्मी यहां से भाग चलिए क्योंकि आज किसान आया था। वह कह रहा था खेती पक गई है। कल बस्ती के लोगों को लाकर कटवा लूंगा।' चिड़िया ने बच्चों से कहा, 'तुम घबराओ नहीं। कल खेत नहीं कट सकता।' मां के समझाने से बच्चों का डर कम हो गया। रात हुई।

चिड़िया सो गई। बच्चे भी सो गए। सुबह हुई तो चिड़िया फिर फ़ुर्र से उड़ गई। बच्चे चूँ-चूँ कर के खेलने लगे। कुछ देर में किसान आया। खेत को देखा-भाला और बोला, 'बस्ती का कोई आदमी नहीं आया। सबने इंकार कर दिया। आज मज़दूर तलाश करूंगा और कल खेत कटवा लूंगा।'

चिड़िया के बच्चों ने सुना तो फिर डर गए। शाम को चिड़िया आई तो बच्चों ने कहा : 'चूँ चूँ, चूँ चूँ... अम्मी आज तो भाग चलो। कल किसान मज़दूरों को लाएगा' चिड़िया ने कहा, 'घबराओ नहीं बच्चों, खेत कल भी नहीं कटेगा।' फिर रात हो गई। चिड़िया सो गई। उसके परों से छुपकर बच्चे भी सो गए। सुबह हुई, चिड़िया जागी। बच्चे जागे। और चिड़िया फिर फुर्र से उड़ गई। कुछ देर बाद किसान आया। खेत को देखा और बोला, 'मज़दूर सब काम से लगे हैं। कोई खाली नहीं। अब इनशा-अल्लाह कल मैं खुद अकेला ही सारे खेत काटूँगा।

'चूँ चूँ, चूँ चूँ, बच्चों नें आपस में कहा। यह बेचारा अकेला इतना बड़ा खेत काटेगा। गलत, बिल्कुल नामुमकिन।'

शाम को चिड़िया आई। उसने बच्चों को बातें करते सुना। पूछा 'क्या आज किसान नहीं आया था?' 'हाँ, आया था अम्मी' सब बोले। माँ ने पूछा, 'उसने आज क्या कहा?' बच्चों ने बताया, 'उसने कहा, कल इनशा-अल्लाह अकेला ही खेत काटूँगा। अम्मी वह अकेला क्या कर सकता है? खेत कितना बड़ा है।'

लेकिन चिड़िया यह सुनकर परेशान हो गई, उसने बच्चों से कहा, 'अब भागो, यहां से चलो। बस आज रात ही में कहीं दूसरी जगह बसेरा करेंगे।' बच्चे बोले, 'अरे वाह अम्मी, आप तो घबरा रही हैं, वह अकेला इतना बड़ा खेत कैसे काट सकता है?' चिड़िया ने कहा, 'हाँ

बच्चों घबराने की बात ही है, कल खेत ज़रूर कट जाएगा।' बच्चों ने फिर कहा, 'वह अकेला कैसे काट लेगा?' चिड़िया ने बच्चों को समझाया,' वह ज़रूर काट लेगा। आज उसने इनशा-अल्लाह कह लिया है।' बच्चों ने पूछा, 'तो इनशा-अल्लाह कहने से क्या होता है?' चिड़िया ने बताया, 'अल्लाह की मदद उसे मिल जाती है। 'इनशा-अल्लाह' कह लेने से इन्सान के हौसले बढ़ जाते हैं। वह अकेला ही काम में जुट जाता है। फिर अल्लाह उसका काम ज़रूर पूरा करा देता है।' यह कहकर चिड़िया बच्चों को लेकर जंगल की तरफ उड़ गई।

'अम्मीजान कहानी खत्म हुई?' हमने पूछा।

'हाँ खत्म ही समझो'

'और खेत...'

दूसरे दिन किसान अकेला हंसिया लेकर आया। और अकेला ही खेत काटने लगा। दिन भर उसने खूब मेहनत से खेत काटा। शाम होते-होते सारा खेत कट गया।

'वाह वाह, खूब। अब हम भी इनशा-अल्लाह कह लिया करेंगे।'

'कैसे कहोगे?' अम्मी ने पूछा।

'इनशा-अल्लाह मैं यह सवाल चुटकी बजाते कर लूंगी।'

'इनशा-अल्लाह मैं इम्तहान में अव्वल आऊगाँ।'

'इनशा-अल्लाह मैं खेल-कूद में फर्स्ट आऊंगा।'

'इन-छा अल्ला, आज मैं छब से पहले बलफी थाऊँ दी।'

यह आखरी बात नन्ही गुड़िया बी की थी। हम सब मुस्कुरा दिए। अम्मीजान ने कहा, 'अब जब कोई काम करो तो 'इनशा-अल्लाह'

ज़रूर कह लिया करो। फिर हमें अम्मी ने बताया, 'बच्चों इनशा-अल्लाह का मतलब होता है, 'अगर अल्लाह ने चाहा'

'जी हाँ अम्मी अल्लाह चाहेगा तभी तो काम बनेगा अल्लाह न चाहेगा तो काम कैसे बनेगा?'

'बहुत ठीक बच्चों। अब जाओ और जाकर सो जाओ।'

सब बच्चों ने 'अस्सलामु-अलैकुम' कहा और सोने चले गए।

४ माशा-अल्लाह

'मेरा फराक कैसा अच्छा है।'

'मेरी जरसी कैसी अच्छी है।'

'और मेरा जम्पर देखो, कैसा फूलदार है, सबसे अच्छा है।'

'वाह वाह मेरा कोट, ऊनी गर्म, बहुत सारे पैसे तो सिर्फ इसकी सिलाई के गए हैं जनाब'

'हम सब अपने-अपने कपड़ों की तारीफ़ कर करके खुश हो रहे थे। इतने में अम्मी आगईं। और हमारी बातें सुनकर बोली, 'हाँ भई माशा-अल्लाह, तुम सबके कपड़े बहुत अच्छे और खूबसूरत हैं'

अप्पी ने सवाल किया, 'अम्मी यह आपने माशा-अल्लाह क्या कहा?'

अम्मी ने कहा, 'प्यारे बच्चों जब कोई अच्छी चीज़ देखो तो माशा-अल्लाह कहना चाहिये।' हमने पूछा, 'क्यों अम्मीजान?' तो उन्होंने बताया, 'अल्लाह का हुक्म है और उसके रसूल की हिदायत है'

हमने पूछा, 'माशा-अल्लाह का मतलब क्या है?'

'मतलब यह है कि जो चाहा अल्लाह ने, यानी अल्लाह ने जो चाहा

हमें दिया। हमने पहना। उसका शुक्र है।'

'जी हाँ। अम्मीजान, बिल्कुल ठीक है, अल्लाह ही तो सब कुछ देता है।' सईदा ने कहा'।

'शाबाश! बच्चों और सुनो। जिस आदमी को अल्लाह देता है, और वह उसका शुक्र अदा नहीं करता, तो फिर अल्लाह अपनी नैमत छीन लेता है।'

'अम्मीजान वह कैसे?'

'वह चीज़ गुम हो सकती है, चोरी भी हो सकती है। तुमने वह कहानी नहीं सुनी?'

'कौनसी कहानी?'

'जो कुरआन मैं है।'

'बिल्कुल सच्ची।'

'हाँ'

'तो फिर सुनाइए।'

'सुनो दो आदमी थे। वे दोनों पड़ौसी थे। एक के पास एक बाग़ था। खूब फूला-फला और हरा-भरा था। एक साल की बात है, बाग़ में खूब फल आए। हर पेड़ फलों से लद गया। तो बाग़ के मालिक ने पड़ौसी से कहा, 'देखो तो मेरा बाग़ कैसा फूला-फला और फलों से लदा है।'

पड़ौसी ने नसीहत की, 'भाई मुबारक हो, माशा-अल्लाह तो कहो। अल्लाह का शुक्र तो अदा करो'

'अजी बहुत शुक्र अदा कर लिया' बाग़ वाले ने ढिटाई से जवाब दिया।

'हैं अम्मीजान।' हम सब कहानी सुनत-सुनते चौंक पड़े। हमने कहा, 'बड़ा खराब आदमी था। अल्लाह ने बाग़ दिया और वह अल्लाह मियां को ही भूल गया।

'सुनो तो फिर क्या हुआ?' अम्मी ने आगे कहानी सुनाई, 'उसी दिन आसमान पर काले-काले बादल आए। तेज़ तूफान आया। आंधी चली। बारिश हुई और बिजली चमकी। इस तूफानी बारिश से सब फल-फूल झड़ गए और बिजली गिरने से सब पेड़ जल गए। और हरे-भरे बाग़ की जगह जले हुए पेड़ रह गये।'

'फिर तो वह बड़ा पछताया होगा।'

'हाँ मगर अब पछताने से क्या होता है?'

'तो अम्मीजान अब हम माशा-अल्लाह कह लिया करेंगे।'

'शाबाश बच्चों' अम्मीजान ने कहा, 'जब कोई पसन्द की चीज़ देखो तो माशा-अल्लाह कह लिया करो। जब किसी को हट्टा-कट्टा और मोटा ताज़ा देखो तो माशा-अल्लाह कह लिया करो। जैसे—यह तुम्हारा मुन्ना भैया है ना, माशा-अल्लाह कैसा तन्दरुस्त है। इसके गाल माशा-अल्लाह कैसे फूले-फूले हैं। तो जब उसे देखो तो कहो, 'माशा-अल्लाह हमारा मुन्ना बहुत अच्छा है।' माशा-अल्लाह कहने से एक फायदा और है।'

'वह क्या अम्मीजान'

'वह यह कि नज़र नहीं लगती—समझे'

'यह तो बड़ी अच्छी बात है। वाह मुफ्त की दवा'

'और बच्चों सब से बड़ी बात यह कि अल्लाह भी खुश होता है।'

'हाँ, अम्मीजान'

'तो कैसे कहोगे?'

'माशा-अल्लाह मेरा फराक कैसा अच्छा है'

'माशा-अल्लाह मेरी जरसी कैसी अच्छी है'

'माशा-अल्लाह मेरा जम्पर तो देखो कैसा फूलदार है'

'सब से अच्छा' हम सब ने एक साथ कहा।

५ बा-रकल्लाह

मैंने बहुत सी बातों में देखा, मेरी अम्मी का तरीक़ा, दूसरी औरतों से अलग है। फिर जब मैंने अब्बू मियां से पूछा या मौलवी साहब से पूछने का मौक़ा मिला तो मालूम हुआ कि मेरी अम्मी का ही तरीक़ा ठीक है। इसलिए मैं समझता हूँ कि अम्मी जो कुछ कहती हैं। और हमें करने की नसीहत करती हैं, वह ठीक है। अभी कल की बात है, हम लोग खाना खा रहे थे कि पड़ौस वाली चची आगईं। अम्मीजान ने उनको देखते ही कहा, 'आओ बहन खाना खालो' उन्होंने जवाब दिया 'बिस्मिल्लाह' करो, अल्लाह ज़्यादा दे।'

उस वक़्त तो हम खाना खाते रहे। कोई कुछ न बोला। लेकिन जब खाना खा चुके। पड़ौसन चची अम्मीजान से बात करके चली गईं, तो सिद्दू ने पूछा 'अम्मीजान जब पड़ौसी चची आई थीं ना, और हम खाना खा रहे थे तो आपने कहा, 'आओ बहन खाना खालो' तो उन्होंने कहा, 'बिस्मिल्लाह' करो अल्लाह ज़्यादा दे' मगर जब कोई आप से कहता है कि आइए खाना खा लीजिए तो आप, बा-रकल्लाह कहती हैं? तो ठीक क्या है?'

अम्मी के बोलने से पहले मैं बोल उठा, 'ठीक तो हमारी अम्मीजान

ही कहती हैं।'

'अच्छा तो जनाब भी मौलवी साहब बन गए' सिद्दू भाई ने कहा, मगर जनाब यह तो बताइए आपको क्या मालूम?'

मैंने भी पटाख से जवाब दिया, 'मालूम क्यों नहीं। हम खाना शुरू ही करते हैं बिस्मिल्लाह करके। तो फिर पड़ौसन चची ने यह क्या बीच में कहा, 'बिस्मिल्लाह करो।'

सिद्दू भाई ने मेरी तरफ देख कर कहा, 'मगर है तो यह भी दुआ ही। और फिर बिस्मिल्लाह तो हर निवाले पर पढ़े तो भी अच्छा ही है। और फिर अम्मीजान बीच में बोली जो थी, तो फिर बिस्मिल्लाह करके खाना शुरू करें, यह मतलब भी तो हो सकता है, उनका।'

सिद्दू भाई की इस बात का मुझसे कोई जवाब नहीं बन पड़ा। और हम सब अम्मीजान की तरफ देखने लगे। अम्मीजान ने कहा,'

'हाँ सिद्दू मियां की बात भी ठीक है। बिस्मिल्लाह भी दुआ है, और खाने के बीच में कह लेने में बिल्कुल कोई हरज नहीं। लेकिन, जब कोई खाना खा रहा है और किसी आने वाले से कहे कि, 'आओ खाना खालो' तो ऐसे मौके पर बा-रकल्लाह कहने का ही ज़्यादा सवाब है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें यही सिखाया है कि ऐसे अवसर पर बा-रकल्लाह कहा करो। आप सल्ल० भी ऐसा ही करते थे। हम मुसलमान हैं। हमको हर काम वैसे ही करना चाहिए जैसे अल्लाह के रसूल ने फरमाया या करके दिखाया।'

मैंने पूछा, 'अम्मीजान यह तो बताईए कि बा-रकल्लाह का मतलब क्या है?' तो अम्मीजान ने बताया, 'मतलब तो बा-रकल्लाह का भी यही है कि अल्लाह बरकत दे। यह बड़ी अच्छी दुआ है। अल्लाह यह

दुआ क़बूल फरमाये। तो हम इस संसार में भी आराम से रहें और मरने के बाद जब अल्लाह मियां के सामने जाएं तो वहां भी अल्लाह हमें बरकत दें। तुमने वह क़िस्सा नहीं सुना जो प्यारे नबी सल्ल० ने अपने प्यारे साथियों को सुनाया था।

कहानी और वह भी प्यारे रसूल सल्ल० की सच्ची कहानी का क्या कहना। हम सब सुनने के लिए सम्भल कर बैठे। अप्पी और भैया ने जो कहानी का नाम सुना तो वह भी खेल-खिलौने छोड़कर हमारे ही पास आ गए। और अम्मीजान ने कहानी इस तरह शुरू की:

'एक था अंधा, एक था गंजा, एक था कोढ़ी। एक बार अल्लाह ने उनका इम्तहान लेने के लिए उनके पास एक फरिश्ता भेजा।'

'फरिश्ता' हम सब एक साथ बोल उठे। अप्पी ने कहा, 'फरिश्ता तो प्यारे रसूल सल्ल० के पास भी आता था।'

अम्मीजान ने बताया, 'हाँ बच्चों प्यारे रसूल के पास जो फ़रिश्ता आता था वह अल्लाह का हुक्म लाता था। और उसका नाम 'जिबराईल' है। जब जिबराईल आते तो रसूलुल्लाह को मालूम हो जाता था। अल्लाह ने इन तीनों के पास जिस फ़रिश्ते को भेजा वह आदमी के भेस में था। ये तीनों उसको पहचान ही नहीं सके कि आदमी है या फ़रिश्ता।

अच्छा सुनो, वह फ़रिश्ता पहले गंजे के पास गया। उससे पूछा 'क्या चाहते हो?' उसने कहा, 'मेरे सर पर अच्छे-अच्छे बाल आ जाएँ। फ़रिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा। उसका गंजापन जाता रहा। फिर उसे एक बकरी दी और कहा कि बा-रकल्लाह। अल्लाह बरकत दे।

उसके बाद वह अंधे के पास गया। उससे पूछा क्या चाहता है? उसने कहा मुझे दिखाई देने लगे। फ़रिश्ते ने उसके चेहरे पर हाथ फेरा, उसकी आंखों में रोशनी आगई। फिर उसे एक गाय दी और कहा कि बा-रकल्लाह। अल्लाह बरकत दे।

फिर वह कोढ़ी के पास गया। उससे पूछा, 'क्या चाहता है?' उसने उत्तर दिया, 'मेरा कोढ़ अच्छा हो जाए।' फ़रिश्ते ने उसके शरीर पर हाथ फेरा। वह आदमी ठीक होगया। उसका रोग जाता रहा। और उसके शरीर पर अच्छी-अच्छी खाल आगई। फिर उसे एक ऊंटनी दी और कहा बा-रकल्लाह।

बरकत की दुआ देकर फ़रिश्ता चला गया। अल्लाह के हुक्म से गंजे की बकरी ने बच्चे दिए। इसी प्रकार अंधे की गाय ने और कोढ़ी की ऊंटनी ने बच्चे दिए। फिर इन बच्चों के बड़ा होने पर उनके बच्चे हुए और फिर उन बच्चों के बच्चे हुए। इस प्रकार तीन चार साल में ही बहुत सारे पशु हो गए। उनकी ग़रीबी खत्म हुई। और वे आराम से रहने लगे।

जब ये तीनों ग़रीब दौलतमन्द होगए तो एक बार फिर वही फ़रिश्ता उनके पास आया। वह गंजे के पास गया, और कहा, 'मैं बहुत दुखी हूँ, मुसाफिर हूँ। अल्लाह ने तुमको बहुत सा माल दिया है तुम मेरी मदद करो। मुझे कुछ पैसे दो ताकि मेरी परेशानी दूर हो। गंजे ने टका सा जवाब दिया, भाग! भाग! मैंने बड़ी मेहनत से यह जानवर पाले हैं और यह धन-दौलत जमा किया है। मैं इस में से तुझको कुछ न दूँगा।'

फ़रिश्ते ने कहा, 'तू गंजा था, अल्लाह ने तुझे सुन्दर-सुन्दर बाल दिए। तू ग़रीब था। तुझे बकरी दी, और फिर तेरी बकरी में बरकत दी।

तू धन वाला हो गया। लेकिन तू अल्लाह को भूल गया। सुन में वही हूँ जिसने अल्लाह के हुक्म से तुझे अच्छा किया और फिर एक बकरी दी थी। लेकिन तू अल्लाह की ओर से ली गई परीक्षा में फेल हो गया। अब अल्लाह तुझको फिर वैसा ही कर देगा जैसा तू पहले था। यह कह कर फ़रिश्ता चला गया। कुछ दिनों में वह आदमी फिर गंजा हो गया। और देखते ही देखते सारी बकरियां मर गईं, और वह फिर से पहले जैसा गंजा व ग़रीब हो गया।

'तौबा! तौबा!! गंजा बड़ा ही नाशुकरा था। हमारी ज़ुबानों से निकला।' अम्मीजान कहानी सुनाती रहीं।

फिर वह फ़रिश्ता अंधे के पास गया। उससे कहा, 'मैं ग़रीब, दुखी मुसाफिर हूँ। कुछ मेरी मदद करो। अल्लाह ने तुमको बहुत सारे गाय-बैल दिए हैं।' मगर अंधे पर कोई प्रभाव न पड़ा। उसने भी नाशुकरेपन की बातें कीं, और फ़रिश्ते से कहा, 'चल, चल, आगे का दरवाज़ा देख' फ़रिश्ते ने उसको भी याद दिलाया, 'तू अंधा था, अल्लाह ने तुझे रोशनी दी। तू ग़रीब था। अल्लाह ने तुझे गाय दी, फिर उसनें उनमें बरक़त दी। मगर तू अल्लाह को भुला बैठा है। अल्लाह फिर तुझे अंधा कर देगा। अल्लाह फिर तुझे ग़रीब कर देगा।' यह कह कर फ़रिश्ता चला गया। अल्लाह के हुक्म से देखते ही देखते उसकी सारी गायें मर गईं। और वह उनके ग़म में रोता-रोता फिर से अंधा हो गया।

उसके बाद फ़रिश्ता ऊंट वाले के पास गया। उससे भी वही कहा, 'मैं दुखी, ग़रीब मुसाफिर हूँ, अल्लाह के लिए मेरी मदद करो।' ऊँट वाले ने कहा, 'मेरे भाई, मैं पहले कोढ़ी था। अल्लाह ने मुझे अच्छा किया। मैं ग़रीब था, उसने मुझे एक ऊँटनी दिलाई। फिर उसमें ऐसी बरकत दी कि मैं धन वाला बन गया। ये सारे ऊँट-ऊँटनी, यह सारा

धन-दौलत अल्लाह का ही दिया हुआ है, मैं इसमें से तुम्हारी मदद ज़रूर करूंगा। तुमको जितना चाहिए, ले लो।'

फ़रिश्ते ने खुश होकर कहा, 'अल्लाह तुमको और ज़्यादा बरकत दे। बा-रकल्लाह। मुझे तुम्हारा माल नहीं चाहिए। सुनो मुझको अल्लाह ने तुम सबकी जांच के लिए भेजा था। जिसमें बकरी वाला और गाय वाला तो फेल हो गए। लेकिन अल्लाह के फ़ज़्ल से तुम कामयाब हो गए।' यह खुशख़बरी सुनाकर और दुआ देकर फ़रिश्ता चला गया। अल्लाह ने उसके माल में खूब बरकत दी और उसकी इज़्ज़त और बढ़ गई।

अम्मी ने समझाया बच्चों, बड़े होकर तुम भी अल्लाह के बन्दों के साथ अच्छा सुलूक करना। क्या मालूम अल्लाह का भेजा हुआ फ़रिश्ता किस वक्त हमारी परीक्षा लेने के लिए किसी ग़रीब ज़रूरतमन्द के भेस में आ जाए। हो सकता है कोई फ़रिश्ता तुमको भी दुआ दे, और तुम्हारे घर मैं भी बरकत नाज़िल हो जाए।

'इन-शा-अल्लाह।' हम हर ज़रूरतमन्द की मदद करेंगे चाहे हम उसे जानते हों, चाहे न जानते हों हमने अम्मीजान से वादा किया। अम्मीजान ने कहा 'और देखो आपस मैं एक दूसरे के लिए बरकत की दुआ किया करो। 'बा-रकल्लाह' कहा करो।'

हमने कहा, 'इन-शा-अल्लाह' ज़रूर हम एक दूसरे के लिए बरकत की दुआ करते रहेंगे'

'अम्मी ने कहा, 'शाबाश। अब जाकर अपना स्कूल का काम करो और फिर सो जाओ। यह कह कर अम्मी भी उठ गई और हम सब भी उठ गए।

६ जज़ाकल्लाह

आज पहले एक लतीफ़ा सुनें और फिर देखें कि हमारी अम्मीजान किस प्रकार हमें इस्लामी रहन-सहन के तौर तरीक़े सिखाती थीं।

एक दिन की बात है, कि हमारी पड़ौसन तोहफे में मक्का की गर्म-गर्म खीलें लेकर आईं। हमारी अम्मीजान बताती थीं कि तोहफा चाहे मामूली ही क्यों न हो, उसको वापस नहीं करना चाहिए, बल्कि ख़ुशी से रख लेना चाहिए। उन्होंने एक बार प्यारे रसूल सल्ल० की एक प्यारी हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह ने फरमाया: 'तोहफा चाहे बकरी की खुर ही हो, फिर भी स्वीकार करो।'

तो बस अम्मीजान ने ख़ुश हो कर मक्का की खीलें लेलीं, और कहा 'जज़ाकल्लाह'। उन्होंने पड़ौसन का दिल रखने के लिए उन खीलों के गरम-गरम होने और सोन्धे-पन की तारीफ भी की, और जब पड़ौसन जाने लगीं तो दोबारा 'जज़ाकल्लाह' कहा।

दूसरे दिन पड़ौसन बी फिर गर्म-गर्म खीलें दे गई। दूसरे दिन भी अम्मीजान ने खीलें लेलीं और 'जज़ाकल्लाह' कहा। तीसरे दिन पड़ौसन फिर गर्म-गर्म खीलें लेकर आई। अम्मीजान ने फिर 'जज़ाकल्लाह' कहा और खीलें लेकर पूछा: 'बीबी तुम यह रोज़-रोज़ खीलों की सौग़ात क्यों लाती हो?' यह सुनकर पड़ौसन बी ने कहा, 'बीबी आप ही तो कहती है, 'जा-जा कल ला' तो मैं दे जाती हूँ।'

यह सुनकर अम्मीजान बहुत हैरान हुईं, और पूछने लगीं, 'बहिन मैनें कब कहा जा-जा कल ला' पड़ौसन बी ने कहा, 'वाह बीबी आपने

तो आज भी खीलें लेते ही कहा जा-जा कल ला'

अभी हम सोच ही रहे थे कि सिद्‌दू चहक कर बोला, 'अम्मी मैं बताऊँ, आप जो यह 'जज़ाकल्लाह' कहती हैं, तो पड़ौसन बी उसको 'जा-जा कल ला' समझीं।' यह सुन कर हम सब को तो हंसी आ गई और बेचारी पड़ौसन बी हक्का-बक्का होकर हम सब को तकती रह गईं। अम्मीजान ने सिद्‌दू की समझदारी की तारीफ़ की और पड़ौसन से कहा, 'बी-बी ज़रा देर बैठो मैं तुमको समझाऊँ कि मैं क्या कहती हूँ। मैं कहती हूँ, 'जज़ाकल्लाह'।

अब अम्मीजान पड़ौसन को 'जज़ाकल्लाह' का मतलब समझाने लगीं, 'देखो बीबी तुम जो हमें सौग़ात देती हो, यह बहुत अच्छी बात है। प्यारे नबी सल्ल० ने फरमाया है कि आपस में तोहफ़े भेजा करो। इससे आपस में मुहब्बत बढ़ती है, और रंजिशें दूर होती हैं। तोहफ़ा चाहे मामूली चीज़ का ही क्यों न हो जरूर क़ुबूल कर लेना चाहिए।'

पड़ौसन बी ध्यान लगाए अम्मीजान की बातें सुनती रहीं और जी-जी करती रहीं। अम्मीजान ने बताया, 'मैं 'जाजा कलला' नहीं, बल्कि 'जज़ाकल्लाह' कहती हूँ, जिसका मतलब है 'अल्लाह तुम को अच्छा बदला दे।' देखो यह कैसी अच्छी दुआ है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह तुम को जन्नत में अच्छी-अच्छी नैमतें दे। यह मैं कुछ अपने दिल से नहीं कहती, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यही सिखाया है।' यह सुनकर पड़ौसन बीबी बोलीं, 'बीबी आप सच कहती हैं। प्यारे रसूल सल्ल० ने हमें बड़े अच्छे-अच्छे तरीक़े सिखाए हैं।'

अम्मीजान ने बताया, 'प्यारे नबी सल्ल० के घर जब गोश्त पकता तो आप फरमाते कि शोरबा ज़्यादा करदो और उसमें से थोड़ा सा पड़ौसी

को भी भेजो। यदि कोई व्यक्ति आपको कोई चीज़ देता, या आपका कोई काम कर देता तो आप खुश होकर उसको 'जज़ाकल्लाह' कहते और बहुत सी दुआएं देते। और यही सबको सिखाते कि जब कोई कुछ दे या कोई काम करदे या कोई काम की अच्छी बात बताए तो यह दुआ दो, 'जज़ाकल्लाह'।

हम सुनते रहे। फिर जब अम्मीजान ने अपनी बात खत्म की तो हम सब की ज़ुबान से निकला, 'जज़ाकल्लाह' अम्मीजान अल्लाह आपको अच्छा बदला दे। कैसी अच्छी बातें बताती हैं आप। पड़ौसन बी ने भी जज़ाकल्लाह कहा और अपने घर चली गईं। हमारे दिल से निकला जैसी हमारी अम्मीजान हैं, अल्लाह सबको ऐसी ही माँ दे। आमीन

७ अलहम्दु-लिल्लाह

एक दिन की बात है, अम्मीजान ने हम सबको मग़िरब से पहले ही खाना खिला दिया। हमने खाना खाकर नमाज़ पढ़ी। घर आए तो सिद्दू ने हमें कहानी का लालच दिया, और बुलाकर अम्मीजान के पास ले गया।

अम्मीजान तो काम में लगी थीं। मगर सिद्दू ने कहानी सुनानी शुरू की। 'बच्चों बहुत दिनों की बात है, एक था बादशाह। हमारा तुम्हारा खुदा बादशाह।' सिद्दू ने यह बात कुछ इस तरह आंखें मटकाकर और हाथ हिलाकर कहीं कि हम सब को हंसी आ गई। वास्तव में पुराने ज़माने में कहानी इसी तरह शुरू किया करते थे। और बात भी सच्ची है। अम्मीजान हम को बताया करती हैं कि हमारा तुम्हारा, इस सारे संसार का सूरज, चान्द, सितारों का, सबका असली बादशाह तो बस एक है, और वह है—'अल्लाह'। हमारी हंसी रुकी तो सिद्दू ने

कहानी को आगे बढ़ाया, 'हां तो एक बादशाह था। बादशाह का एक वज़ीर था। वह वज़ीर बड़ा नेक, दीनदार, सच्चा, ईमानदार और साथ ही बड़ा समझदार था। वह हमेशा अल्लाह को याद रखता। अपनी अक़्ल, पद और दौलत पर कभी न इतराता, बल्कि उनके लिए अल्लाह का शुक्र अदा करता। लोगों के साथ भलाई और नरमी से पेश आता और बादशाह को हमेशा अच्छी राय देता। वह बात-बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करता और 'अलहम्दु-लिल्लाह' कहता। जिसका मतलब है— 'सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है।' कभी ऐसा भी होता कि चुप बैठे-बैठे उसे अल्लाह की कोई नैमत या रहमत याद आ जाती और उसकी ज़ुबान से 'अलहम्दु-लिल्लाह' निकल जाता।' सिद्दू ने कहानी सुनाते हुए आगे बताया, 'एक बार एक भारतीय व्यापारी बादशाह के दरबार में पहुंचा, और बादशाह को हिन्दुस्तान की बनी हुई तलवारें दिखाईं। पुराने ज़माने में यहां तलवारें बड़ी अच्छी होती थीं और दूर-दूर तक मशहूर थीं। व्यापारी बादशाह को एक-एक तलवार दिखाता जाता और उसके गुण भी बताता जाता। 'हुज़ूर ! यह है रेशम काट, यह पत्थर-काट है, यह है आबदार, यह ताबदार, यह चम-चम और यह अटूट। व्यापारी एक तलवार राजा को दिखाता जा रहा था। अन्त मैं उसने एक छोटा सा गोल-गोल डिब्बा निकाला और बादशाह को बताया कि यह लप-लप है। बादशाह ने इस नाम की और ऐसी तलवार कभी न देखी थी और न सुनी थी। सौदागर ने डिब्बे में से तलवार निकाली जो देखने मैं बिल्कुल ऐसी लगती थी जैसे कि फीता या निवाड़ गोल-गोल लिपटा हुआ हो। व्यापारी ने तलवार का क़ब्ज़ा हाथ मैं पकड़ कर एक बटन दबाया। बटन के दबते ही शररर... की आवाज निकली और अब उसके हाथ मैं लप-लप करती एक चमकीली

तलवार थी। उसने तलवार को इधर-उधर हिला चलाकर दिखाया बादशाह ने पूछा, 'मगर यह बन्द कैसे होगी?' व्यापारी ने वही हैंडिल में लगा दूसरा बटन दबा दिया। तलवार लिपट कर फिर गोला सा बन गई। बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने यह कमाल की तलवार देखने के लिए अपने हाथ में ली। कब्ज़ा ठीक से पकड़ा और बटन दबा दिया। तलवार शरर. . से खुलकर सीधी हो गई। वह एक उगंली से तलवार की धार देखने लगा की बेख्याली में तलवार को बन्द करने वाला बटन दब गया। तलवार इतनी तेज़ी के साथ बन्द हुई कि बादशाह जिस उंगली से धार देख रहा था वह कट कर दूर जा गिरी और उंगली से खून फूट पड़ा। बादशाह की ज़ुबान से निकला 'उफ-अल्लाह'। और वज़ीर की ज़ुबान से निकला—'अलहम्दु-लिल्लाह'।

हम सबको सिद्दू की कहानी में बड़ा मज़ा आ रहा था। सिद्दू ने इतनी कहानी सुना कर ज़रा सांस लिया तो हम सबने पूछा, 'आगे क्या हुआ' सिद्दू साहब ने ज़रा खंकार कर गला साफ किया और बोले, 'जनाब बस होना क्या था। अपनी उंगली कटने पर वज़ीर की ज़ुबान से अल्हम्दु-लिल्लाह सुनकर बादशाह को एक दम ग़ुस्सा आ गया और वह वज़ीर को डांट कर बोला, 'मेरी तो उंगली कटी, और तुम अलहम्दु-लिल्लाह कह कर अल्लाह का शुक्र अदा कर रहे हो। इसमें शुक्र अदा करने की क्या बात है।' वज़ीर ने कहा, 'हुज़ूर हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।' बादशाह ने यह सुनकर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, 'इस बेवकूफ़ को राजधानी से बाहर निकाल दो और इसका सारा सामान छीन कर ग़रीबों में बांट दो।'

बस फिर क्या था, देखते ही देखते वज़ीर अपने बीबी बच्चों के साथ खाली हाथ राजधानी से बाहर निकाल दिया गया न पास पैसा न

सवारी। फिर बीवी बच्चों का साथ। बेचारा मुसीबतें भरता नगर से सुनसान रास्ते पर निकल पड़ा। और कहीं दूसरे नगर में जा बसा।

इधर बादशाह की सुनो। इस घटना के काफी दिन बाद बादशाह शिकार के लिए जंगल में पहुँचा। काफी देर के बाद बादशाह को एक हिरन दिखाई दिया। उसने अपना घोड़ा हिरन के पीछे डाल दिया और उसका पीछा करते-करते कई किलो मीटर दूर निकल गया। एक झाड़ी के पास पहुंच कर हिरन गुम हो गया, बादशाह उसको न पा सका। वह काफी थक गया था। और उसके साथी कहीं पीछे रह गए थे। बादशाह एक पेड़ के नीचे घोड़े से उतर गया। घोड़े को एक तरफ बांधा। चमड़े की बोतल से निकाल कर पानी पिया, और आराम करने बैठ गया। ठंडी-ठंडी हवा लगी तो सो गया। वह अभी सो ही रहा था कि कुछ जंगली आदमियों ने उसे देख लिया। उनको देवी पर भेंट देने के लिए एक आदमी की तलाश थी। सोते हुए बादशाह को देख कर खुश हो गए। और उसको दबोच लिया। बादशाह को बांध कर वे अपने सरदार के पास ले गए। सरदार भी बड़ा खुश हुआ। बादशाह को देवी पर चढ़ाने के लिए तैयारी की जाने लगी। सब लोग देवी के सामने जमा होकर नाचने-गाने लगे। अभी बादशाह को गले से ज़िब्ह करने की तैयारी हो रही थी कि एक पुजारी की नज़र उसकी कटी हुई उंगली पर पड़ी। उसने सरदार से कहा, 'इसकी उंगली कटी है, देवी इसकी भेंट स्वीकार नहीं करेगी। सही सलामत आदमी चाहिए' सरदार ने कटी हुई उंगली देखी, बुरा सा मुंह बनाया और बादशाह को छोड़ दिया गया।

जब बादशाह वापस हुआ तो उसने सोचा आज इस कटी हुई उंगली

के कारण बच गया। नहीं तो आज जान गई थी। जब यह उंगली कटी तो वज़ीर ने 'अलहम्दु-लिल्लाह' जो कहा था, वह ठीक ही कहा था। यह सोचता हुआ राजधानी वापस आया और वज़ीर को तलाश करने चारों ओर सिपाही भेज दिए। जब वज़ीर मिल गया तो बादशाह के दरबार में लाया गया। बादशाह ने वज़ीर को फिर से अपना वज़ीर बना लिया और कहा, 'तुम ने सच कहा था हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करते रहना चाहिए।' सिद्दू यहां तक कह चुका तो बोला, 'कहानी खत्म हुई। तभी अम्मीजान आ गईं और बोलीं 'नहीं, सिद्दू अभी कहानी अधूरी है, पूरी नहीं हुई।' हम सोचते रहे, कहानी में क्या कमी रह गई। सिद्दू ने कहा, 'अम्मीजान अब जो कमी रह गई वह आप पूरी कर दीजिए।' अम्मी ने कहा : 'बच्चों जब वज़ीर वापस आया तो राजा ने कहा, 'यह बात तो मेरी समझ में आ गई कि मेरी उंगली कटी होने से मेरी जान बच गई। अलहम्दु-लिल्लाह, लेकिन इतने दिनों तुम जो कष्ट उठाते रहे, तो उसमें अल्लाह का क्या एहसान है?'

वज़ीर बोला, 'जनाब अल्लाह का शुक्र है उस वक़्त मैं आपके पास न था। अगर मैं आपके पास होता तो आपका साथ न छोड़ता फिर जंगल में दोनों पकड़े जाते। आप तो कटी उंगली देख कर छोड़ दिए जाते, मगर मैं फंस जाता। मेरे हाथ, पैर, आंख, कान, नाक सब बिल्कुल ठीक हैं। इसलिए वे जंगली मुझको ही देवी पर भेंट चढ़ा देते। अलहम्दु-लिल्लाह कि पहले ही आपने मुझे निकाल दिया था।'

बादशाह यह सुनकर बहुत खुश हुआ। दरबार में जितने लोग थे, सब 'अलहम्दु-लिल्लाह', अलहम्दु-लिल्लाह कहने लगे। तो बच्चों, प्यारे नबी सल्ल० ने हमें जो तौर-तरीक़े, रहने-सहने के जो ढंग सिखाए हैं वे कितने अच्छे हैं। तुम भी हर हाल में अलहम्दु-लिल्लाह कहा करो।

अलहम्दु-लिल्लाह कहानी खत्म हुई।

सीरते रसूल (सल्ल०) की कुछ पुस्तकें

आख़िरी नबी (सल्ल०)	–हमूदा अब्दुल आती
विश्व-नेता	– मौलाना मौदूदी
कुरआन और पैग़म्बर	–मौलाना मौदूदी
जगत गुरू	–अबू ख़ालिद
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	–इनायतुल्लाह सुबहानी
जिसका इन्तिज़ार था	–माहिरुल क़ादिरी
प्यारे नबी ऐसे थे !	–माइल ख़ैराबादी
प्यारे रसूल (बच्चों के लिए)	–अफ़ज़ल हुसैन
विश्व नायक	–डा० कौसर यज़दानी नदवी
हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) का आदर्श	–श्री नाथूराम
हमारे हुज़ूर (बच्चों के लिए)	–इरफ़ान ख़लीली
हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) का संदेश	–मौलाना मौदूदी
हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) का असली कारनामा	–मौलाना मौदूदी
पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिम विद्वानों की नज़र में	– इमामुद्दीन रामनगरी
इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल०)	– प्रो० रामा कृष्णा राव
आख़िरी पैग़म्बर	–सैयद मुहम्मद इक़बाल
मानवता का आदर्श	

सम्पूर्ण पुस्तक सूची मुफ़्त प्राप्त करें।

इस्लामी साहित्य प्रकाशन
1525, सूई वालान, नई दिल्ली–110002